STUDYHUB.NET.IN

चौहान वंश — भाग 2

रणथम्भौर, जालौर, नाडोल, सिरोही और हाड़ौती की शाखाएं

1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की पराजय का मतलब चौहान वंश का अंत नहीं था। यही वह बिंदु है जहाँ अधिकतर विद्यार्थी भ्रमित हो जाते हैं — मानो एक युद्ध हारते ही पूरा वंश इतिहास के पन्नों से गायब हो गया। असल कहानी इससे बिल्कुल अलग है। अगले लगभग सौ वर्षों तक चौहानों की अलग-अलग शाखाएँ **रणथम्भौर, जालौर, नाडोल, सिरोही और हाड़ौती** में स्वतंत्र सत्ताओं के रूप में टिकी रहीं, और इनमें से कुछ शाखाएँ — जैसे बूँदी और कोटा — तो 1947 तक चलती रहीं। इस भाग में हम इन सभी शाखाओं को क्रमशः समझेंगे।

🏰 1. रणथम्भौर के चौहान — हम्मीरदेव और राजस्थान का प्रथम साका

तराइन की पराजय के बाद पृथ्वीराज तृतीय के पुत्र **गोविंदराज** ने कुछ समय बाद रणथम्भौर में चौहान वंश का स्वतंत्र शासन स्थापित किया। यह कोई शांत उत्तराधिकार नहीं था — उनके उत्तराधिकारी वल्हण को दिल्ली सुल्तान इल्तुतमिश ने पराजित कर दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। इसी वंश के शासक **वाग्भट्ट** ने पुनः दुर्ग पर कब्जा कर चौहान शासन फिर से स्थापित किया।

रणथम्भौर के सबसे प्रतापी और अंतिम शासक **हम्मीरदेव चौहान** थे। उन्होंने दिग्विजय की नीति अपनाते हुए अपने राज्य का चारों दिशाओं में विस्तार किया। अपने जीवन में उन्होंने कुल 17 युद्ध लड़े, जिनमें से 16 में उन्हें विजय मिली — यह आँकड़ा अकेला बताता है कि हम्मीरदेव कितने कुशल योद्धा थे।

टकराव की शुरुआत तब हुई जब हम्मीरदेव ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सैनिक नेता **मुहम्मदशाह** को अपने यहाँ शरण दे दी। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने इसे अपनी सत्ता के लिए चुनौती माना और रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया। दीर्घ घेरे और अंतिम भीषण युद्ध के बाद **1301 ई.** में हम्मीरदेव की पराजय हुई। उनकी पत्नी **रंगदेवी** ने दुर्ग की अन्य राजपूत स्त्रियों के साथ जल जौहर किया, और सभी राजपूत योद्धा युद्धभूमि में मारे गए। 11 जुलाई 1301 को दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

> 🔑 **परीक्षा बिंदु:** इसी युद्ध को **राजस्थान का पहला साका (1301 ई.)** माना जाता है। इस अभियान में कवि **अमीर खुसरो** स्वयं अलाउद्दीन की सेना के साथ उपस्थित था, जिससे हमें समकालीन विवरण मिलता है।

हम्मीरदेव ने पंडित विश्वभट्ट (विश्वरूप) के नेतृत्व में 'कोटी यजन यज्ञ' भी करवाया था। साहित्यिक दृष्टि से **नयनचन्द्र सूरी** ने अपने ग्रन्थ 'हम्मीर महाकाव्य' में हम्मीरदेव की दिग्विजयों का वर्णन किया है, जबकि **चन्द्रशेखर** ने अपने ग्रन्थ 'हम्मीरहठ' में एक दिलचस्प प्रसंग दर्ज किया है — मुहम्मदशाह और अलाउद्दीन खिलजी की मराठा रानी चिमना ने मिलकर सुल्तान की हत्या का षड्यंत्र रचा था, और जब यह षड्यंत्र विफल हुआ तो मुहम्मदशाह भागकर हम्मीरदेव की शरण में आ गया।

बिंदु	विवरण
वंश संस्थापक (रणथम्भौर)	गोविंदराज (पृथ्वीराज तृतीय के पुत्र)
पुनर्स्थापक	वाग्भट्ट (इल्तुतमिश से दुर्ग पुनः जीता)
अंतिम/सर्वाधिक प्रतापी शासक	हम्मीरदेव चौहान
कुल युद्ध / विजय	17 युद्ध, 16 में विजय
पतन	**1301 ई.**, अलाउद्दीन खिलजी द्वारा
पत्नी का जौहर	रंगदेवी
साहित्यिक स्रोत	हम्मीर महाकाव्य (नयनचन्द्र सूरी), हम्मीरहठ (चन्द्रशेखर)

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** रणथम्भौर के साके (1301) और चित्तौड़ के साकों को छात्र अक्सर मिला देते हैं। याद रखें — रणथम्भौर का साका सबसे पहला है, चित्तौड़ के दो साके (1303 और 1568) इसके बाद की घटनाएँ हैं।

💡 **अनुभवी टिप्पणी:** हम्मीरदेव की कथा केवल वीरता की नहीं, बल्कि शरणागत-धर्म की भी है — उन्होंने एक शरणागत को सुल्तान को सौंपने से इनकार किया, चाहे इसकी कीमत उनके पूरे राज्य के विनाश के रूप में चुकानी पड़ी।

🏰 2. जालौर के चौहान — सोनगरा वंश और कान्हड़देव का बलिदान

जालौर का प्राचीन नाम **जाबालीपुर** या **जालहुर** था, और यहाँ के किले को **सुवर्णगिरी** कहा जाता है। प्रतिहार शासनकाल (8वीं से 11वीं सदी के प्रारम्भ तक) में यह एक समृद्ध नगर था। प्रतिहारों की शक्ति क्षीण होने के बाद इस प्रदेश पर परमारों का शासन स्थापित हुआ, लेकिन 13वीं सदी में नाडोल शाखा के **कीर्तिपाल चौहान** ने परमारों को पराजित कर यहाँ **सोनगरा चौहान वंश** की स्थापना की। सुण्डा पर्वत अभिलेख में उन्हें 'राजेश्वर' कहा गया है।

कीर्तिपाल के उत्तराधिकारी समरसिंह ने जालौर दुर्ग को और सुदृढ़ बनाया। समरसिंह के पुत्र **उदयसिंह** सोनगरा शासकों में सबसे शक्तिशाली थे — उन्होंने दिल्ली सुल्तान इल्तुतमिश के आक्रमण को असफल कर उसे वापस लौटने को मजबूर किया।

सन् 1305 में जालौर के शासक बने **कान्हड़देव चौहान**। अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर पर अधिकार करने की योजना बनाई। जालौर के मार्ग में पहले **सिवाना** का दुर्ग पड़ता था, इसलिए **1308 ई.** में अलाउद्दीन ने पहले सिवाना दुर्ग पर आक्रमण कर उसे जीत लिया, उसका नाम **खैराबाद** रख दिया और कमालुद्दीन गुर्ग को वहाँ का दुर्ग-रक्षक नियुक्त किया। इस युद्ध में वीर सातल और सोम वीरगति को प्राप्त हुए।

सन् **1311 ई.** में अलाउद्दीन ने जालौर दुर्ग पर आक्रमण किया। कई दिनों के घेरे के बाद हुए अंतिम युद्ध में अलाउद्दीन की विजय हुई — वीर कान्हड़देव सोनगरा और उनके पुत्र **वीरमदेव** युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। विजय के बाद अलाउद्दीन ने जालौर में एक मस्जिद का निर्माण करवाया। इस युद्ध की जानकारी **पद्मनाभ** के ग्रन्थ 'कान्हड़दे प्रबन्ध' तथा 'वीरमदेव सोनगरा की वात' में मिलती है।

शासक	प्रमुख कार्य
कीर्तिपाल चौहान	सोनगरा वंश की स्थापना, परमारों को पराजित किया, 'राजेश्वर' उपाधि
समरसिंह	दुर्ग सुदृढ़ीकरण, पुत्री लीलादेवी का विवाह भीमदेव द्वितीय से
उदयसिंह	इल्तुतमिश के आक्रमण को असफल किया
कान्हड़देव चौहान	1305 ई. में सत्तारूढ़, 1311 ई. में अलाउद्दीन के विरुद्ध वीरगति

💡 **परीक्षा ट्रिक:** जालौर पतन का क्रम — पहले "सिवाना" (1308, रास्ते का दुर्ग) फिर "जालौर" (1311, मुख्य दुर्ग)। याद रखें: "सिवाना पहले गिरा, जालौर बाद में" — यही क्रम MCQ में सबसे ज्यादा पूछा जाता है।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** रणथम्भौर (1301) और जालौर (1311) दोनों ही अलाउद्दीन खिलजी से जुड़े पतन हैं, परन्तु दोनों की तिथियाँ और शासक अलग-अलग हैं। हम्मीरदेव-रणथम्भौर-1301 और कान्हड़देव-जालौर-1311 — इन्हें कभी आपस में न बदलें।

🏯 3. नाडोल के चौहान — सबसे प्राचीन शाखा

चौहानों की इस शाखा के संस्थापक शाकम्भरी नरेश वाक्पति के पुत्र **लक्ष्मण चौहान** थे, जिन्होंने लगभग **960 ई.** में चावड़ा राजपूतों के आधिपत्य से स्वयं को स्वतंत्र कर चौहान वंश का शासन स्थापित किया। शाकम्भरी के मूल चौहान राज्य के बाद यह पहला अलग चौहान राज्य था — इसी कारण इसे **चौहानों की सबसे प्राचीन शाखा** कहा जाता है।

नाडोल शाखा के कीर्तिपाल चौहान ने 1177 ई. के लगभग मेवाड़ शासक सामन्तसिंह को पराजित कर मेवाड़ को भी अपने अधीन कर लिया था। **1205 ई.** के लगभग नाडोल के चौहान जालौर की सोनगरा चौहान शाखा में विलीन हो गए, और इस तरह एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई के रूप में नाडोल का अस्तित्व समाप्त हो गया।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** नाडोल शाखा संस्थापक — लक्ष्मण चौहान (~960 ई.); नाडोल का जालौर में विलय — ~1205 ई. इन दो तिथियों को आगे-पीछे न करें।

🛕 4. सिरोही के चौहान — देवड़ा शाखा और दत्ताणी का युद्ध

सिरोही में चौहानों की **देवड़ा शाखा** का शासन था, जिसकी स्थापना लगभग 1311 ई. में **लुम्बा** ने की थी। इनकी प्रारम्भिक राजधानी **चन्द्रावती** थी। बार-बार होने वाले मुस्लिम आक्रमणों के कारण इस वंश के **सहासमल** ने **1425 ई.** में सिरोही नगर की स्थापना कर इसे अपनी नई राजधानी बनाया।

सिरोही के इतिहास की सबसे चर्चित घटना है **दत्ताणी का युद्ध (1583 ई.)**। इसमें सिरोही महाराव सुरताण ने अकबर की भेजी शाही सेना को पराजित किया। अकबर ने इस अभियान में मेवाड़ के जगमाल (महाराणा प्रताप के भाई) और मारवाड़-बीकानेर के रायसिंह को भेजा था — यानी सिरोही की एक छोटी सेना ने मुगल समर्थित बड़ी सेना को परास्त कर दिया।

1823 ई. में यहाँ के शासक शिवसिंह ने ईस्ट इंडिया कम्पनी से संधि कर ली। स्वतंत्रता के बाद सिरोही राज्य जनवरी 1950 में राजस्थान में मिला दिया गया।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** दत्ताणी युद्ध (1583) में जगमाल और रायसिंह "अकबर की ओर से" लड़े थे, "सिरोही की ओर से" नहीं — यह दिशा अक्सर उलट कर पूछी जाती है।

⚔️ 5. हाड़ौती के चौहान — बूँदी की स्थापना

हाड़ौती क्षेत्र के अंतर्गत वर्तमान बूँदी, कोटा, झालावाड़ और बारां आते हैं। **1241 ई.** में हाड़ा चौहान **देवा** ने — जो नाडोल के चौहानों के वंशज थे — मीणा शासक जैता को पराजित कर इस क्षेत्र में चौहान वंश का शासन स्थापित किया। बूँदी का नाम यहाँ के स्थानीय शासक **बूँदा मीणा** के नाम पर पड़ा।

1569 ई. में यहाँ के शासक सुरजन सिंह ने अकबर से संधि कर मुगल अधीनता स्वीकार कर ली — इसी के साथ बूँदी मेवाड़ की अधीनता से मुक्त हो गया। राजस्थान में मराठों का सर्वप्रथम प्रवेश बूँदी में ही हुआ — **1734 ई.** में बुद्धसिंह की कछवाही रानी आनन्द (अमर) कुँवरी ने अपने पुत्र उम्मेदसिंह के पक्ष में मराठा सरदार होल्कर और राणोजी को आमंत्रित किया था।

> 💡 **परीक्षा ट्रिक:** "देवा-1241-जैता" — देवा हाड़ा ने 1241 ई. में मीणा शासक जैता को हराकर बूँदी में चौहान शासन शुरू किया, और नगर का नाम मीणा शासक बूँदा के नाम पर ही पड़ा।

🏯 6. कोटा के चौहान — बूँदी से पृथक रियासत

कोटा प्रारम्भ में बूँदी रियासत का ही एक भाग था। यह क्षेत्र पहले कोटिया भील के नियंत्रण में था, जिसे बूँदी के संस्थापक देवा के पौत्र **जैत्रसिंह** ने मार कर अपने अधिकार में किया — कोटिया भील के नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम कोटा पड़ा।

1631 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने बूँदी नरेश राव रतनसिंह के पुत्र **माधोसिंह** को कोटा का पृथक राज्य देकर उसे बूँदी से स्वतंत्र कर दिया।

शासक (काल)	प्रमुख कार्य/घटना
मुकुन्द सिंह हाड़ा (1648-1658 ई.)	अबली मीणी महल का निर्माण ('हाड़ौती का ताजमहल'); 1658 में धरमत के युद्ध में वीरगति
किशोर सिंह	कोटा के किशोर सागर तालाब का निर्माण
रामसिंह प्रथम (1696-1707 ई.)	उत्तराधिकार युद्ध में आजम का साथ दिया, जाजऊ के युद्ध में मारे गए
भीम सिंह प्रथम (1707-1720 ई.)	कोटा रियासत का सबसे प्रभावशाली शासक; 'महाराव' की उपाधि; बाद में राज-पाट त्यागकर भक्ति-मार्ग अपनाया (स्वयं का नाम 'कृष्णदास' और कोटा का नाम 'नन्दगाँव' रखा)
शत्रुशाल	इनके फौजदार **झाला जालिमसिंह** ने 1761 ई. में भटवाड़ा के युद्ध में जयपुर नरेश माधोसिंह की सेना को पराजित किया

भटवाड़ा की विजय के बाद कोटा के प्रशासन में झाला जालिमसिंह का प्रभाव लगातार बढ़ता गया, और अंततः वे ही कोटा राज्य के वास्तविक प्रशासक बन गए।

> पूरक संधि (1817) की शर्तें: → उम्मेदसिंह व उनके वंशज कोटा के राजा (महाराव) बने रहेंगे → झाला जालिमसिंह व उनके वंशज कोटा के दीवान बने रहेंगे → कोटा की सभी वास्तविक शक्तियाँ दीवान (झाला परिवार) के पास रहेंगी

झाला जालिमसिंह (1769-1823 ई.) को कोटा राज्य का **'वीर दुर्गादास राठौड़'** कहा जाता है। दिसम्बर 1817 ई. में जालिमसिंह झाला ने कोटा की ओर से ईस्ट इंडिया कम्पनी से संधि कर ली।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** कोटा का दीवान-शासन मॉडल याद रखें — "राजा महाराव, सत्ता दीवान के पास" — 1817 की पूरक संधि में यह स्पष्ट रूप से लिखा गया।

🏛️ 7. झालावाड़ — हाड़ौती में चौहान शाखा या अपवाद?

झाला जालिमसिंह के पौत्र **मदनसिंह झाला** ने 1837 ई. में कोटा से अलग होकर **झालावाड़** रियासत की स्थापना की, और 1838 ई. में अंग्रेजों ने इसे मान्यता दे दी। झालावाड़ राजस्थान की सबसे नई रियासत थी, और इसकी राजधानी झालरापाटन बनाई गई। झालरापाटन को 'घण्टियों का शहर' कहा जाता है। यहाँ का **शीतलेश्वर महादेव मंदिर** राजस्थान में सबसे प्राचीन दिनांकित (689 ई.) मंदिर माना जाता है।

⚠️ **परीक्षा सावधानी:** यह बिंदु बार-बार गलत पूछा और गलत उत्तर दिया जाता है — झालावाड़ का शासक वंश झाला है, चौहान नहीं। झाला परिवार मूलतः कोटा के हाड़ा चौहान शासकों के फौजदार थे। भौगोलिक रूप से झालावाड़ हाड़ौती क्षेत्र का हिस्सा है, इसलिए इसका उल्लेख चौहान-वंश की कहानी के साथ होता है, पर वंशानुक्रम की दृष्टि से इसे चौहान शाखा कहना तथ्यात्मक रूप से गलत होगा।

❓ PYQ — परीक्षा में पूछे गए प्रश्न

Q1. राजस्थान के प्रथम साके के रूप में किस घटना को जाना जाता है? (RAS Pre 2018)
(A) चित्तौड़ का प्रथम साका (1303)
(B) रणथम्भौर का पतन (1301) ✓
(C) चित्तौड़ का द्वितीय साका (1568)
(D) जालौर का पतन (1311)
व्याख्या: हम्मीरदेव चौहान की पराजय और रानी रंगदेवी के जौहर के साथ रणथम्भौर का पतन (1301 ई.) राजस्थान का प्रथम साका माना जाता है।

Q2. जालौर के सोनगरा चौहान वंश की स्थापना किसने की? (SI 2021)
(A) समरसिंह
(B) कीर्तिपाल चौहान ✓
(C) उदयसिंह
(D) कान्हड़देव
व्याख्या: नाडोल शाखा के कीर्तिपाल चौहान ने परमारों को पराजित कर जालौर में सोनगरा चौहान वंश की स्थापना की।

Q3. कान्हड़देव सोनगरा और उनके पुत्र वीरमदेव की वीरगति किस वर्ष हुई? (Patwari 2022)
(A) 1301
(B) 1308
(C) 1311 ✓
(D) 1318
व्याख्या: 1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर पर अधिकार किया।

Q4. चौहानों की सबसे प्राचीन शाखा कौन-सी मानी जाती है? (RAS Pre 2016)
(A) रणथम्भौर के चौहान
(B) जालौर के सोनगरा चौहान
(C) नाडोल के चौहान ✓

(D) सिरोही के देवड़ा चौहान
व्याख्या: नाडोल शाखा की स्थापना लक्ष्मण चौहान ने लगभग 960 ई. में की थी।

Q5. दत्ताणी का युद्ध (1583 ई.) किसके मध्य लड़ा गया? (SI 2023)
(A) सिरोही महाराव सुरताण और अकबर की सेना ✓
(B) मेवाड़ और गुजरात के चालुक्य
(C) कोटा और जयपुर
(D) बूँदी और मेवाड़
व्याख्या: दत्ताणी के युद्ध में सिरोही महाराव सुरताण ने अकबर की भेजी सेना को पराजित किया।

Q6. कोटा को बूँदी से पृथक कर स्वतंत्र राज्य कब बनाया गया? (RAS Pre 2019)
(A) 1569 ई.
(B) 1631 ई. ✓
(C) 1707 ई.
(D) 1817 ई.
व्याख्या: 1631 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने माधोसिंह को कोटा का पृथक राज्य देकर उसे स्वतंत्र किया।

🗝️ Part 2 — स्मरणीय संकेत (Memory Tricks)

- **रणथम्भौर का प्रथम साका:** "रण-1301-रंग" = रणथम्भौर + वर्ष 1301 + रानी रंगदेवी का जौहर।
- **जालौर पतन का क्रम:** "सिवाना पहले (1308), जालौर बाद में (1311)"।
- **नाडोल शाखा:** "लक्ष्मण-960-स्वतंत्र" = लक्ष्मण चौहान, ~960 ई., चावड़ों से स्वतंत्र।
- **सिरोही-दत्ताणी:** "सुरताण जीता, जगमाल-रायसिंह अकबर की ओर से हारे"।
- **बूँदी संस्थापक vs नामकरण:** "देवा ने जीता, बूँदा के नाम पर शहर बना"।
- **कोटा पृथक्करण:** "1631-शाहजहाँ-माधोसिंह"।
- **कोटा का वास्तविक शासक:** "राजा महाराव, सत्ता दीवान (झाला जालिमसिंह) के पास" — 1817 पूरक संधि।

📚 Quick Revision Box — Part 2

चौहान वंश की शाखाएं (1192 के बाद):

रणथम्भौर:
→ संस्थापक - गोविंदराज (पृथ्वीराज III पुत्र)
→ अंतिम शासक - हम्मीरदेव (17 युद्ध, 16 विजय)
→ पतन - 1301 ई., अलाउद्दीन खिलजी, पत्नी रंगदेवी जौहर (राजस्थान का प्रथम साका)
→ स्रोत - हम्मीर महाकाव्य (नयनचन्द्र सूरी), हम्मीरहठ (चन्द्रशेखर)

जालौर (सोनगरा चौहान):
→ संस्थापक - कीर्तिपाल चौहान (नाडोल शाखा से)
→ पतन - 1311 ई., कान्हड़देव व वीरमदेव वीरगति (पहले सिवाना 1308 गिरा)
→ स्रोत - कान्हड़दे प्रबन्ध (पद्मनाभ)

नाडोल: संस्थापक लक्ष्मण चौहान (~960 ई.) | सबसे प्राचीन शाखा | 1205 ई. जालौर में विलय

सिरोही (देवड़ा शाखा):
→ संस्थापक - लुम्बा (~1311 ई.), राजधानी चन्द्रावती
→ दत्ताणी का युद्ध (1583) - महाराव सुरताण ने अकबर की सेना हराई

हाड़ौती:
→ **बूँदी** - देवा हाड़ा ने 1241 ई. में जैता को हराया; नाम बूँदा मीणा से
→ **कोटा** - 1631 ई. शाहजहाँ ने माधोसिंह को बूँदी से अलग किया
→ झाला जालिमसिंह (1769-1823) - 'कोटा का दुर्गादास राठौड़', वास्तविक सत्ता दीवान के पास
→ **झालावाड़** - मदनसिंह झाला, 1837-38 ई. कोटा से पृथक (झाला वंश, चौहान नहीं)

समग्र परिणाम: चौहान शक्ति 1192 में समाप्त नहीं हुई, बल्कि शाखाओं में बदल गई — रणथम्भौर व जालौर 14वीं सदी में अलाउद्दीन खिलजी के सामने गिरे, जबकि बूँदी व कोटा (हाड़ा चौहान) 1947 तक चलते रहे।